more demands for potato seeds. How can they, if the reputation is damaged? The point is...

SHRI BHUPESH GUPTA: Sir, it is a diversion. The documents show that they had supplied lesser quantity...

MR. CHAIRMAN: He has answered the question.

SHRI SARDAR AMJAD ALI: Sir, from the statement it appears that 150 quintals were allocated for distribution in Assam. It has not been said in the statement whether the distribution was made as seed to the growers or for crushing it as flour. I would like to know from the Minister whether he would get the information from the National Seeds Corporation that these 150 quintals were given for distribution seeds. This is the first information that I want. Along with it, Sir, I expect that the hon. Minister will take it up with all seriousness. As you know, Sir, two hon. Members of this House are associated with the activities of the National Seeds Corporation. One is our respected friend, Mr. Gadgil, and the other hon. Member is here. Sir, so many things have come in the newspapers and already a public opinion has been created outside. So, I would like to know clearly from the hon. Minister as to whether the seeds were given for distribution as seed, and if not, then what were the things which were being done by the Corporation, who were the officers responsible for them, and what steps have been taken against them.

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: As far as these 150 quintals are concerned, these were handed over to the State Government and the State agencies for distribution to the farmers.

SHRI D. THENGARI: As there have been cases of rowdyism, may I ask whether the Minister has personally enquired as to who is responsible for rowdyism, whether it is the employees or the officials, and whether any enquiry has been made personally by him or he is depending upon the reports of the officials, who may be themselves guilty of the rowdyism?

SHRI ANNASAHEB P. SHINDE: Sir, naturally I have to depend upon the report of the Department and the National Seeds Corporation in these matters. But there have been some problems of indiscipline. I am not prepared to apportion blame to A, B or C because it is a matter of details.

MR. CHAIRMAN: Next Question.

*64. [*The questioner* (*Shri Bhola Prasad was absent. For answer* vide *cols.* 33-34 infra.]

प्रतिव्यक्ति दूध की उपलब्धि

***65. श्री सीताराम सिंह :†**
श्री सवाई सिंह सिसोदिया :
श्री महेंद्र बहादुर सिंह :
श्रीमती लक्ष्मी कुमारी चूंडावत :

क्या कृषि मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे कि 1 जनवरी, 1974 को देश में प्रति व्यक्ति औसतन कितना दूध उपलब्ध था ?

‡[*Per capita* **availability of milk in the country**

*65. SHRI SITARAM SINGH :†
SHRI SAWAISINGH SISODIA:
SHRI MAHENDRA BAHADUR SINGH:
SHRIMATI LAKSHMI KUMARI CHUNDAWAT:

Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state the average *per capita* availability of milk in the country as on 1st January, 1974?]

†The question was actually asked on the floor of the House by Shri Sitaram Singh.

‡[ ] English translation.

कृषि मंत्रालय में राज्य मंत्री (श्री बी० पी० मौर्य) : अनुमान लगाया गया है कि 1 जनवरी, 1974 को देश में दूध की प्रति व्यक्ति औसत उपलब्धि 110 ग्राम थी। यह अनुमान 1 जनवरी, 1974 को देश की अनुकल्पित आबादी और वर्ष 1973-74 के दौरान दूध के प्रत्याशित उत्पादन के आधार पर लगाया गया है।

यह बताना सम्भव नहीं है कि किसी विशेष समय दूध की कितनी मात्रा उपलब्ध होती है।

†[THE MINISTER OF STATE IN THE MINISTRY OF AGRICULTURE (SHRI B. P. MAURYA): The average *per capita* availability of milk in the country as on 1st January, 1974 is estimated to be of the order of 110 gms. This is calculated on the basis of the estimated population in the country as on 1st January, 1974 and the anticipated production of milk during the year 1973-74.

It is not possible to give the exact quantity of milk produced at a particular point of time.]

श्री सीताराम सिंह : श्रीमन, हमारा सवाल बिलकुल सीधा और साफ है, लेकिन मंत्री जी की ओर से जवाब नहीं दिया गया कि दूध की उपलब्धि कितनी होती है। अनुपात में बताने में कोई कठिनाई है मंत्री जी को। प्रति व्यक्ति औसत कितनी दूध की खपत है इसका अनुपात बताइए।

श्री बी० पी० मौर्य : श्रीमन्, प्रति व्यक्ति कितना खर्च होता है यह मैंने निकाल कर बताया है। जहां तक पूरे उत्पादन का प्रश्न है, उत्पादन लगभग 23.2 मिलियन टन के करीब जाकर पड़ेगा। जहां तक दूसरे अनुपात का प्रश्न है क्या अनुपात माननीय सदस्य चाहते हैं यह बताएं तो मैं आगे बता सकता हूं।

श्री सीताराम सिंह : हमारा सवाल यह है कि हमारे देश में औसत प्रति व्यक्ति उपलब्धि दूध की कितनी होती है।

श्री सभापति: जवाब दे दिया।

श्री सीताराम सिंह : बैसिस क्या है, आधार क्या है, यह बताइए।

SHRI LOKANATH MISRA: What is the basis of assessment? How has he come to that conclusion that it is 110 grams?

श्री बी० पी० मौर्य : श्रीमन्, देश की आबादी की हर दस साल के बाद जनगणना होती है। '71 की जनगणना लेकर, जनसंख्या किस अनुपात से बढ़ रही है, 1 जनवरी 74 तक अन्दाजन कितनी आबादी थी इसका ध्यान रखते हुए हम पहली अक्टूबर से निकालते हैं। जो आबादी का रेशो आता है उसको भाग देते हैं जितने जानवर हैं उससे और उन जानवरों के जरिए जितना दूध मिलता है उसको साल में जितने दिन होते हैं उससे भाग देकर निकाल लेते हैं और उसको फिर आबादी में भाग देकर एक व्यक्ति का निकाल लेते हैं। यह आधार है।

श्री सीताराम सिंह : हमारा एक सवाल है कि कितने लोगों को दूध नहीं मिलता है ?

MR. CHAIRMAN: I am not permitting this question. Mr. Sisodia.

SHRI SAWAISINGH SISODIA: What are the important schemes under consideration of the Ministry for increasing milk and milk products in the country, and within how much period is it possible to raise the target of minimum 10 ounces per day required for a balanced diet?

श्री बी० पी० मौर्य : श्रीमन्, कृषि मंत्रालय यह प्रयत्न कर रहा है कि क्रास-ब्रीड के जरिए स्कीम को ज्यादा से ज्यादा छोटे किसान और मध्यम वर्ग के किसानों को फैलाएं। इसके अलावा नस्ल को सुधारें, बैंक्स से धन देने की व्यवस्था करके दूध को ज्यादा से ज्यादा पैदा किया जाय। यह अपनी जगह सत्य है कि आज देश का जो न्यूट्रीशन का आधार है वह 210 ग्राम है जबकि हम 110 ग्राम ही दे पाते हैं।

श्री सवाई सिंह सिसोदिया : श्रीमन्, मेरे प्रश्न का उत्तर नहीं दिया। 210 ग्राम जो आपने बैलेन्स्ड डाइट के लिये तय किया है वह कब तक पूरा होगा ? कोई कल्पना है, इसके बारे में कोई योजना है ?

†[ ] English translation.

श्री सभापति : आप अपनी कल्पना बताइए।

श्री बी० पी० मौर्य : इस आधार पर हम चलना चाहते हैं कि पंचवर्षीय योजना के अन्त में करीब 28.6 मिलियन टन पैदा करें। तब करीब आबादी बढ़कर 632.7 मिलियन की हो जाएगी तब जाकर पर कैपिटा कंजम्पशन 108.3 आयेगा। लेकिन वह काफी नजदीक होगा 210 के। पर हम टारगेट को पूरा नहीं कर पायें हैं।

श्रीमती लक्ष्मीकुमारी चुन्डावत : हमारे मुल्क में कितने डेरी प्लांट है, उनकी इंस्टाल्ड कैपेसिटी क्या है और इंस्टाल्ड कैपेसिटी के अनुसार उनका प्रोडक्शन कितना है?

श्री बी० पी० मौर्य : Sir, am I to give answer to this question?

MR. CHAIRMAN: If you can, give it. If you have got the figures you may answer.

SHRI B. P. MAURYA: Sir, I will need notice for it.

श्री श्यामलाल गुप्त : आपकी जो फिगर हैं दूध पैदा करने की तो कितनी हमारे यहां गायें हैं, कितनी बकरियां है, कितनी भैंसे हैं और हर एक की कितनी कितनी दूध की पैदावार है?

श्री बी० पी० मौर्य : हर 5 साल के बाद जानवरों की गणना होती है। 1972 मे इनकी गणना हुई थी, लेकिन बहुत से प्रदेशों ने अभी तक हमारे पास उसकी सूचना नहीं भेजी है। लेकिन उससे पहले 1966 मे जो गणना हुई थी उसके आधार पर कहा जा सकता है कि करीब 23 मिलियन भैंसे हैं, करीब 46 मिलियन गायों का अंदाजा किया जाता है। आज के दिन करीब 26 मिलियन भैंसे और 49 मिलियन के करीब गायें होगी लेकिन निश्चित पूर्वक नहीं कहा जा सकता क्योंकि कई ऐसे प्रदेश हैं जिनसे अभी तक इनके बारे मे सूचना नहीं मिली है।

श्री यशपाल कपूर : अध्यक्ष जी, बहुत देर से श्वेत क्रान्ति की बात सुनाई जा रही है और आज कहा जाता है कि 110 ग्राम दे पाते हैं जब कि पंजाब में इससे दुगुना है। तो जो हमारे उत्तर प्रदेश को खास तौर पर पूर्वी इलाका है वहां तो आप 10 ग्राम भी दूध नहीं दे पाते है। आपने श्वेत क्रान्ति में 90 करोड़ रुपये का पाउडर और घी बाहर से मंगवा कर लोगों को पिलाया है। और पांचवीं पंचवर्षीय योजना में भी आप पर्याप्त दूध नहीं दे पायेंगे, तो श्वेत क्रांति का क्या हुआ?

श्री बी० पी० मौर्य : यह अपनी जगह पर सत्य है कि पंजाब में देश के और प्रदेशों के मुकाबले में अधिक दूध होता है। लेकिन जैसा कि माननीय सदस्य भी जानते होंगे यहां पर गाय का दूध देखा जाय तो एक गाय का रेशियो आकर निकलेगा 1.18 किलोग्राम और एक भैंस का निकलेगा 2.62 कि० ग्रा०। जब इस तरह का अनुपात है तो जब तक कि क्रास-ब्रीडिंग के कार्यक्रम को पूरा न किया जाए क्योंकि क्रास-ब्रीडिंग कार्यक्रम को अभी 7 लाख जानवरों तक पहुंचा पाये हैं या बहुत थोड़े हिस्से में पहुंचा पाये हैं उसकी वजह से उसका अनुपात 5–6 कि०ग्रा० का निकल आया है। जब तक हम इसको कई गुना न बढ़ायें तब तक समस्या का हल होने वाला नहीं है।

श्री आर० के० पोद्दार : मिनिस्टर साहब आंकड़े बता रहेहै उससे यह लगता है कि रोज-रोज कितनी पैदावार होती है। वह आंकड़े इनके पास आ जाते है। मेरे सहयोगी ने पूछा और 110 ग्राम का इन्होंने बताया कि 1974 में पड़ता है। अभी यह बता रहे हैं कि 1972 के मवेशियों के आंकड़े नहीं आयें है और 1966 के आंकड़ों से इन्होंने ऐवरेज निकाला है। अभी आपने 1974 की फिगर्स बताई और आप कहते हैं कि 1974 की जानवरों की फिगर्स नहीं हैं तो आपने यह आंकड़े कहां से निकाले?

श्री बी० पी० मौर्य : मैंने 1974 के निश्चित-पूर्वक आंकड़े नहीं दिये। मैंने कहा कि अंदाजा यह है और उस अंदाजे के आधार पर यह निकाल कर बता दिया।

SHRI K. CHANDRASEKHARAN: Sir, the acute scarcity of milk which we are experiencing in the country today can probably be solved only if there are good cattle breeding farms. May I know whether some of the cattle breeding farms, particularly those with foreign collaboration, are not working properly? May I know from the hon. Minister what steps are being taken to see that the Indo-Swiss project that has been established in Munnar in Kerala works more efficiently and yields the necessary results, because it has not been working in a proper and efficient manner all these years?

SHRI B. P. MAURYA: The hon. Member has given an important advice and we would like to see that there is no inefficiency anywhere in any farm.

SHRI BABUBHAI M. CHINAI: Sir, may I know from the hon. Minister what steps Government has taken or proposes to take to prevent Government dairies from being dependent on private dairies and vendors but have their own farms and as to how many Government dairies have their own farms and to what extent they are self-sufficient?

SHRI B. P. MAURYA: Sir, it is true that almost every dairy is dependent on the supply of milk from the contractors or middlemen or milk producers. As it is not profitable for every dairy to have its own cattle breeding farm, the Government has started encouraging the small farmers and the marginal farmers and is requesting financial institutions to help them so that more milk is produced.

SHRI K. S. MALE GOWDA: Sir, may I know what are the comparable figures of *per capita* liquid milk consumption in U.K., U.S.A., and India?

SHRI B. P MAURYA: The figure may be quite alarming as the world standard is supposed to be 300 grams. Some of the countries like Denmark may be having up to 731. About U.K. I do not have the figures at the moment. But the world standard is 300 grams, that of Denmark 731 while the Indian standard of nutrition is taken to be 210.

SHRI G. LAKSHMANAN: Is the Government aware that not even a single tin of baby food is available in the whole of India at reasonable price but being sold in the black market?

SHRI B. P. MAURYA: So far as our Ministry is concerned, it has hardly any control on the distribution of milk products or baby food.

SHRI G. LAKSHMANAN: In order to avoid blackmarketing...

MR. CHAIRMAN: No further questions please.

श्री ओम् प्रकाश त्यागी : मैं माननीय मंत्री जी से जानना चाहता हूं कि जो आपने उत्तर दिया है प्रति व्यक्ति दूध की उपलब्धि के बारे में क्या इसमें जो आप बाहर से मिल्क पाउडर मंगाते हैं वह भी इसमें शामिल है या केवल कैटिल्स के आधार पर इतना है और यह मैं जानना चाहता हूं कि पिछले दो, तीन वर्षों में दूध की प्रति व्यक्ति उपलब्धि जो है उसके आंकड़े क्या है? उस में वृद्धि हुई है या वह अवनति पर है और क्या यह सच है कि .

श्री सभापति : आपने प्रश्न तो पूछ लिया।

श्री ओम् प्रकाश त्यागी : मैं यह जानना चाहता हूं कि जब तक आप मिल्क पाउडर का यहां आयात बन्द नहीं करेंगे तब तक दूध की उपलब्धि की देश में वृद्धि नहीं होगी—क्या सरकार इसको अनुभव करती है? अगर

अनुभव करती है तो मिल्क पाउडर का बाहर से आयात बन्द करने पर विचार करेंगे ?

श्री बी० पी० मौर्य : श्रीमन्, जैसा कि मैंने निवेदन किया, जो 110 ग्राम का औसत पर कैपिटा निकाला गया है वह यहां के जानवरों का जो दूध है उसके आधार पर निकाला गया है। हां, यह सत्य है कि इसमें दूध की बनी हुई चीजें भी शामिल हैं--जो दूध से घी और चीजें बनती हैं वे भी इसमें शामिल हैं। श्रीमन् जहां तक आंकड़ों का सवाल है, माननीय सदस्य त्यागी जी ने सत्य ही कहा है कि यह पर कैपिटा कन्जमशन लगातार घटता जा रहा है क्योंकि अवेलेबिलिटी घटती जा रही है। प्रथम पंचवर्षीय योजना में, 1951-52 में यह 131 ग्राम था, दूसरी पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में 137.9 ग्राम थी और तीसरी पंचवर्षीय योजना के प्रारम्भ में 115.3 ग्राम थी। चौथी पंचवर्षीय योजना के शुरू में यह 112.2 ग्राम थी और आज जब हम पांचवीं पंचवर्षीय योजना प्रारंभ करने जा रहे हैं तब यह 110.2 ग्राम के करीब आता है। यह अपनी जगह सत्य है कि यह लगातार घटता चला जा रहा है लेकिन इसका कारण यह नहीं है कि हम दूध कम पैदा कर रहे हैं। जहां तक दूध पैदा करने का सवाल है पहली पंचवर्षीय योजना के पहले 17.5 मिलियन टन पैदा करते थे जबकि आज करीब 23.2 मिलियन टन पैदा होता है।

श्री ओउम् प्रकाश त्यागी : दूध बढ़ता है या उसकी उत्पत्ति कम हो रही है ?

श्री बी० पी० मौर्य : हम दूध के प्रोडक्शन को बढ़ाते हैं। माननीय सदस्य को जितनी चिंता हो रही है, उनको वह चिंता करने की आवश्यकता नहीं है। हम दूध की उपलब्धि को बढ़ाते हैं .9 सैकड़ा के अनुपात से। एक साल में लेकिन आबादी भी दुर्भाग्यवश बढ़ जाती है 2·3 सैकड़ा के अनुपात से इस वजह से उपलब्धि गिरती है, हालांकि जो हमने पैदा किया वह पहले से ज्यादा है।

श्री ओउम् प्रकाश त्यागी : क्या मिल्क पाउडर का आयात आप बन्द करेंगे कि नहीं करेंगे ?

श्री बी० पी० मौर्य : श्रीमन्, यह तो एक सिद्धांत का प्रश्न है। सरकार निश्चयपूर्वक चाहती है कि ऐसा हो लेकिन यह मिल्क पाउडर पहले तो तोहफे के रूप में हमें मिलता था। सन् 1970-71 के पहले हमने कभी इसको बाहर से नहीं मंगाया क्योंकि वह तोहफे के तौर पर मिलता था। लेकिन आज की कुछ परिस्थितियां, मजबूरियां ऐसी हैं कि वह मंगाना पड़ता है करीब 20,000 टन। सरकार निश्चयपूर्वक चाहती है जितना इसमें काट कर सकें, जितना कम मंगाए और एकदम समाप्त कर सक तो अच्छा हो लेकिन यह सब परिस्थितियों पर निर्भर करेगा।

SHRI SUBRAMANIAN SWAMY: Has the Minister considered banning the multi-national corporations from producing milk powder in this country? Does he know that they are earning profits above 30 per cent when the indigenous industry in this area is suffering?

SHRI B. P. MAURYA: Sir, I shall need notice for that.

MR. CHAIRMAN: Next question.

SHRI KRISHAN KANT: May I suggest that question No. 73 regarding import of wheat and other foodgrains be taken up together?

DR. R. K. CHAKRABARTI: Only five minutes are left.

SHRI HARSH DEO MALAVIYA May I suggest that some time may be fixed for discussing this problem of wheat?

MR. CHAIRMAN: If you give me notice, I will consider it.

Wheat Contracts with Australian Wheat Board

*66. SHRI O. P. TYAGI: Will the Minister of AGRICULTURE be pleased to state:

(a) whether it is a fact that Government had approached the Australian